संत पिटर्सबर्ग–पेरिस उड़ान
सितम्बर १५, २००६

सन्देश संख्या १७६
निर्मन की सुगन्ध के नौ आयाम

१. स्मृति जो मानसिक पंजीकरणों से मुक्त है, अहंकार एवं स्वार्थ अर्थात् 'मैं' की विकृतियों से मुक्त है, उसी के पास व्यावहारिक एवं तकनीकी आँकड़ों के लिए उचित स्थान होता है । ऐसी ही स्मृति स्वस्थ होती है, जीवनोपयोगी होती है ।

२. स्मृति और बुद्धि 'जो है' या जो तथ्य है, के आधार पर काम करती हैं जबकि मन और 'मैं', 'ऐसा होना चाहिए की मान्यता का अवलम्ब लेकर कल्पना के आधार पर काम करते हैं ।

३. विचार और 'विचारक' के कार्य करने की प्रक्रिया जिसमें 'विचारक' की सहायता से विचारों का निरन्तर उत्पन्न होना जारी रहता है, हमेशा ही विभेदकारी चित्तवृत्ति के उधारी एवं बासी विचारों में फँस जाना है, जैसे कि विश्वास या अविश्वास पद्धतियों से सम्बन्धित विचार, मानव–सम्बन्धों के प्रत्येक स्तर पर विभाजन एवं द्वन्द्व उत्पन्न करने वाले प्रतीकों से सम्बन्धित विचार, चाहे वे एकता एवं अखण्डता को दिखाने वाले प्रतीक ही क्यों न हों ।

४. मनुष्य में, सजगता की अस्तित्वमय ऊर्जा में विचारक और विचार का तथा द्रष्टा और दृश्य का लय हो जाना ही आनन्द और आशीर्वाद का प्रारम्भ है । किसी भी व्यक्ति या किसी भी आदर्श का अनुकरण, इस लय को बाधित करता है ।

५. याद करना, जानना नहीं है । 'ज्ञात होना' भी जानना नहीं है । जानना तो ज्ञाता और ज्ञात के विभाजन से मुक्त होकर ध्यानपूर्वक सुनने के माध्यम से प्रतिक्षण समझदारी की ऊर्जा में होना है । जानने के आनन्द में वृद्धि भी नहीं होती । अतः जानने को, जीवन को, अर्थात् सजगता को उपलब्ध होओ !

६. धर्म का सार अत्यन्त पवित्र है । यह कमकाण्डों, प्रार्थनाओं, मन्त्रों, पूजा, भक्ति–गीतों के गायन आदि में आसक्ति से मिलने वाला सुख नहीं है यद्यपि ये सभी उस सार की तरफ ले जाने वाली यात्रा में बहुत उपयोगी हैं ।

७. चाहना और पाना ऊर्जा की बरबादी है । जब कि द्रष्टारहित देखना प्रज्ञा ऊर्जा का उदय है । द्वन्द्व के कारण तुम चाहते हो और जो तुम पाते हो वह जटिल होता है, और भी द्वन्द्वपूर्ण होता है । धार्मिक कार्य एक ही है और वह है स्वाध्याय के द्वारा, अर्थात् स्वयं को जानने के द्वारा आन्तरिक निर्द्वन्द्वता को उपलब्ध होना । यह द्वन्द्व को नियन्त्रित करने के प्रयास से या उसका कोई उपाय निकालने से सम्भव नहीं होता बल्कि द्वन्द्व का द्रष्टा–भाव रहित दर्शन से होता है ।

८. जब तुम चिन्तित, ईर्ष्यालु या भयभीत होते हो, जब तुम अपमानित या प्रशंसित होते हो, तब तुम ऊर्जा का क्षय करते हो जबकि धार्मिक होने का अर्थ है – ऊर्जा का संचय ।

९. कोई भी आदत, चाहे वह कामवासना की हो, शराब की हो, सिगरेट की हो या किसी अन्य वस्तु की हो, ऊर्जा के क्षय के द्वारा वह तुम्हें असंवेदनशील और मन्दबुद्धि बनाती है । तब तुम ड्रग्स (मादक द्रव्य) के सेवन द्वारा आश्चर्यजनक अनुभव प्राप्त कर सकते हो, किन्तु वह सब भी क्षुद्र मन ही होता है । अधिक सूचनाओं के संग्रह से, महान संगीत से तथा दुनिया के खूबसूरत स्थानों के पाँच–सितारा होटलों में होने वाले 'स्वास्थ्य कार्यक्रमों' में भाग लेने से मन की क्षुद्रता कम नहीं होती । मन का स्वस्थ होना, निर्मन की प्रज्ञा नहीं है । एक व्यक्ति जो मौन, प्रेम या स्वास्थ्य के विषय में जानता है, वह वस्तुतः मौन, प्रेम या स्वास्थ्य को नहीं जानता। निर्मन की प्रज्ञा इस बात के प्रति जागृति में है कि जानकारी से मुक्ति सम्भव है और उसके बावजूद जानकारी की जब आवश्यकता हो, उसका उपयोग भी हो सकता है ।

।। निर्मन की सुगन्ध की जय ।।